AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | An Open Access & Indexed
Volume 06 | Issue 09 | September 2025 | *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 01-10

मध्य भारत में डायन, टोनही, मान्यताओं का इतिहास बौद्ध धर्म के तंत्रयान से हिन्दू धर्म में विकृति तक का सफर

डॉ. ज्योतिबाला बारसागढ़े[1], श्री. हेमन्त कुमार बारसागढ़े

1. वीरागंना रानी अंवती बाई लोधी शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय रामाटोला, राजनादगांव

~~~~~~

प्रस्तावना :—

भारत में डायन और टोनही मान्यताएं सामाजिक, सास्कृतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में गहराई से जुडी नजर आती है। ये मान्यताएं विभोष रूप से भारत के नगरीय, ग्रामीण और जनजातीय बाहुल्य क्षेत्रों में दिखाई देती है, जहां इन्हें अन्धविभवास, जादू — टोना और अलौकिक शक्तियों से जोड़ा जाता है। इसके विपरीत हम बौद्ध धर्म की तंत्रयान शाखा की बात करें तो हमें दिखाई देता है, तन्त्र—मन्त्र के द्वारा सिद्धि हासिल करना और ऐसी सिद्धि प्राप्त महिलाओं को डाकिनी कहा जाता था, अब विचार करने वाली बात यह है कि डाकिनी या सिद्ध महिलाएं जिनकों समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था समय के साथ हिन्दू धर्म की विकृति स्वरूप बौद्ध धर्म तंत्रयान की सिद्ध महिला डाकिनी को डायन और टोनही जैसे शब्दों को प्रयोग किया जाता है। समाज में इन्हें हेय दृष्टि से देखा जाने लगा, उन्हें सामाजिक रूप से प्रताड़ना का भिाकार हाने पड़ा, बौद्ध धर्म के सिद्ध धर्म के सिद्ध और नाथ परम्परा में जिन सिद्ध महिलाओं का सम्मान था, हिन्दू धर्म में पतित एवं एवं अपमानित कर अन्धविभवास, सामाजिक पृथककरण तक ढ़केल दिया गया।

डायन, टोनही मान्यताएं :—

सामान्यतः टोनही छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेभा जैसे राज्यों में प्रचलित एक अंधविभवास माना जाता है, जिसमें कुछ महिलाओं को जादू—टोने या काला जादू करने वाली माना जाता है, और इन्हें टोनही, डायन कहा जाता है, ऐसा विभवास है कि ये लोग दूसरों को नुकसान पहुंचा सकते

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dr. Jyoti bala barsagade Virangna Rani Awanti Bai Lodhi Govt.Art's & Commerce College Ramatola, Distt-Rajnandgaon(C.G.) Email: jbarsagde@gmail.com	
~~~~~~

है। उदाहरण के लिए जैसे – बिमारी लाना, अकाल मौत, नजर लगाना, अपंग करना या फसल बर्बाद करना।

डायन शब्द का प्रयोग पुरे भारत में व्यापक है जो ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक रूप से डाकिनी से संबंधित हो सकता है। लोक मान्यता में डायन को अक्सर चुडैल एवं आत्मा से जोड़कर देखा जाता है।[1]

टोनहा (बैगा) इसी तरह हम छत्तीसगढ़ मध्यप्रदेश के इलाको की तरफ ध्यान देते है, तो पाते है कि गांव में इस तरह के सिद्ध पुरूष भी है जो गांव को बुरी आत्माओं और टोनही के प्रकोप से बचाता है, उसे बैगा कहते है। जो झाड़–फूंक का काम घर बांधना आदि कार्य करते है, मतलब अपनी सिद्धियों का उपयोग वो लोगों की भलाई के लिए करता है। इसके विपरीत टोनहा वह व्यक्ति है जो दूसरो को नुकसान पहुंचाता है– जैसे बीमारी लाना, नजर लगाना आदि इसे गांव में टोनहा कहते है।[2]

इस तरह हम देखतें है कि महिलाओं के लिए टोनही, डायन जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है और पुरूषों के लिए टोनहा शब्द का प्रयोग करते है। बौद्ध धर्म के तंत्रयान में जिन्हें सिद्ध महिला योगिनी, डाकिनी और पुरूषों को सिद्ध पुरूष या योगी कहकर सम्बोधित किया जाता था, उन्हें टोनही, डायन, टोनहा आदि नामों से जाना जाता है। जिन लेखको शोधार्थियों ने इस विषय पर शोधकार्य किया उन्होनें इसे केवल वर्तमान से जोड़कर इसें सामाजिक विषमता, अंधविश्वास, लिंग–भेद आदि से जोड़ दिया, ऐसा उन्होनें भ्रमवश ऐसा लिखा क्योकि उन्होनें इसके इतिहास को बौद्ध धर्म के तंत्रयान से जोड़कर देखनें की कोशिश नही किया। इसलिए ऐसा लिख दिया।[3]

डायन टोनही की मान्यताएं प्राचीन भारतीय और लोककथाओं में भी देखी जाती है, उदाहरण के लिए कुछ तांत्रिक ग्रंथों में डाकिनी का उल्लेख अलौकिक शक्तियों वाली महिला के रूप में मिलता है। हालांकि आधुनिक संदर्भ में यह मान्यता अंधविश्वास और सामाजिक कुरितियों से अधिक जोडी गई।

तंत्रयान की तांत्रिक मान्यताएं एवं सिद्धिया

तंत्रयान की अवधारणा :–

तंत्रयान बौद्ध धर्म का गुढ़ रूप है जो मुख्य रूप से वज्रयान के रूप है जो मुख्य रूप से वज्रयान के रूप में जाना जाता है। यह महायान बौद्ध धर्म का विस्तार है। तिब्बती बौद्ध धर्म में इसका विशेष महत्व है। वज्रयान तंत्रयान और मंत्रयान का स्पष्ट अर्थ यह है–

वज्रयान – तीव्रगति (जल्दी मोक्ष की ओर ले जाने वाला)
तंत्रयान – शरीर साधना
मंत्रयान – मन की साधना

मंत्र, यंत्र और मंडल :–

तंत्रयान में मंत्र (पवित्र ध्वनिया) यंत्र (ज्यामितीय आकृतियां) और मंडल का उपयोग ध्यान और साधना के लिए साध्य है, ये उपकरण चेतना शुद्व करने आत्मज्ञान, तत्वज्ञान की ओर ले जाने में सहायक है।

देवता योग :–

साधक अपने मन को किसी विशेष बौद्व देवता (जैसे – तारा, अवलोकितेश्वर या मंजूश्री) के साथ एकीकृत करते है यह प्रक्रिया ध्यान कल्पना और मंत्र जप के माध्यम से होती है।

शक्ति और ऊर्जा :–

तंत्रयान में शरीर के सूक्ष्म ऊर्जाओं (प्राण, नाड़िया और चक्र) का उपयोग आध्यात्मिक उन्नति के लिए किया जाता है। यह बौद्व दर्शन के अनुरूप है।

गुरू की भूमिका :–

तंत्रयान में गुरू को सर्वोपरि माना जाता है क्योकि वे साधक को तांत्रिक दीक्षा और मार्गदर्शन प्रदान करते है। जो आगे चलकर सिद्धो की गुरू–शिष्य परम्परा का आधार बने।

मोक्ष का त्वरित मार्ग :–

वज्रयान को '' त्वरित'' मार्ग वज्रयान वज्र– बिजली यान – मार्ग कहा जाता है, क्योकि यह आत्मज्ञान को तेजी से प्राप्त करने को दावा करता है बशर्ते साधक सही विधियों और गुरू के मार्ग दर्शन का पालन कर सकें।

तांत्रिक मान्यताएं :–

तंत्रयान की मान्यताएं बौद्व दर्शन के मूल सिद्धातों जैसे शून्यता और करूणा पर आधारित है लेकिन इनका अभ्यास तांत्रिक – प्रथाओं के माध्यम से होता है। कुछ प्रमुख मान्यताएं –

संसार और निर्वाण की एकता –

तंत्रयान में यह विश्वास है कि संसार संसारिक जीवन और निर्वाण (मोक्ष) अलग–अलग नही है। सही दृष्टिकोण और साधना से संसार के अनुभवों को आध्यामिक प्रगति के लिए उपयोग किया जा सकता है।

कुंडलिनी और चक्र –

तंत्रयान में शरीर के चक्रो (ऊर्जा केन्द्रो) और कुंडलिनी शक्ति का उपयोग किया जाता है। वर्तमान हिन्दू धर्म एवं सिद्वो की तांत्रिक मान्यताओं में यह प्रचलित है।

कर्म मुद्रा और ज्ञान मुद्रा –

बौद्व तांत्रिक प्रथाओं में मानसिक और शरीरिक एकीकरण पर जोर दिया जाता है। कर्म मुद्रा में शरीरिक साथी के साथ साधना शामिल हो सकती है, जबकि ज्ञान मुद्रा में यह कल्पना के माध्यम से होती है।

रहस्यमयता –

बौद्व तंत्रयान की कई प्रथाएं गुप्त (गुह्य) होती है और केवल दीक्षित साधको को दिखाई जाती है। यह गोपनीयता प्रथाओं के दुरूपयोग को रोकने के लिए होती है। इन्हें गुह्य (गुप्त) क्रिया करने वाले भी कहा जाता था।

सिद्वियां (आध्यात्मिक शक्तियां)–

बौद्व तंत्रयान में सिद्वियां आध्यात्मिक साधना के परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाली शक्तियां है। इन्हे दो श्रेणीयों में बांटा जाता है। (लौकिक सिद्वियां) (संसारिक शक्तियां) और लोकोत्तर सिद्वियां (आध्यात्मिक शक्तियां)

लौकिक सिद्वियां –

ये संसारिक शक्तियां है जो साधक को साधना के दौरान प्राप्त हो सकती है लेकिन इन्हे बौद्व तंत्रयान में कम महत्व दिया जाता है, क्योकि ये आत्मज्ञान के मार्ग में बाधा बन जाती है –

उदाहरण –

अणिमा – सूक्ष्म रूप धारण करना।

महिमा – विशाल रूप धारण करना।

लघिमा – हल्का होकर उड़ना।

प्राप्ति – इच्छित वस्तु प्राप्त करना।

प्राकाम्य – इच्छा शक्ति से कार्य सिद्व करना

वशित्व – दूसरों पर नियंत्रण।

ईशित्व – सृष्टि पर प्रभुत्व

कामावासायिता – इच्छाओं को पूर्ण करना।

लोकोत्तर सिद्वियां –

ये सिद्विया आत्मज्ञान और बुद्धुत्व की प्राप्ति से संबंधित है, तंत्रयान से इन्हें सर्वोच्च माना जाता है ।

उदाहरण –

बुद्वत्व – पूर्ण आत्मज्ञान और करूणा की प्राप्ति

शून्य का बोध – सभी घटनाओं की खाली प्रकृति को समझना।

दिव्यदृष्टि और श्रमण – अलौकिक दृष्टि और सुनने की क्षमता।

करूणा और बोधिचित्त – सभी प्राणियों के प्रति करूणा और उनके कल्याण के लिए कार्य करने की शक्ति।

सिद्वियो की प्राप्ति की प्रक्रियां –

दीक्षा – गुरू से तांत्रिक दीक्षा प्राप्त करना।

मंत्र जप– विशिष्ट मंत्रों का जाप जैसे – ऊँ मणि पद्मे हूँ।

(अवलोकितेश्वर का मंत्र)

मंडल पूजा – मंडल में ध्यान और दृष्यीकरण।

साधना – विशेष तांत्रिक प्रथाएं जैसे चक्रसंधारा या काल चक्र साधना।

नैतिकता – साधक को शील (नैतिक आचरण) और बोधिचित्त (करूणा) का पालन करना आवश्यक है।

भारत में बौद्व तंत्रयान का विकास 5वी से 7वी शताब्दी के बीच हुआ जिसमें तंत्र, मंत्र, जप, रहस्य के द्वारा निर्वाण प्राप्त किया जाता था। स्वाभाविक है इन सिद्वियों को प्राप्त करने के लिए त्वरित मार्ग (वज्रयान) की सहायता ली गई जिससे आगे चलकर सिद्व, गुह्य, पंथ, नाथ पंथ, जैसे सम्प्रदायों का विकास हुआ।

हिन्दू धर्म में तांत्रिक क्रियाओं की विकृति –

हिन्दू धर्म में तांत्रिक क्रियाएं एक प्राचीन और गहन आध्यात्मिक परम्परा का हिस्सा है, जो मंत्र, तंत्र, मंडल और विभिन्न साधनाओं के माध्यम से आध्यात्मिक और भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति पर केन्द्रित है। हांलाकि समय के साथ–साथ तांत्रिक प्रथाओं में विकृतियां आई इनका दुरूपयोग सामाजिक कुरितियों के रूप में दिखाई देता है। ये विकृतियां सम्पूर्ण भारत विशेषकर छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश के इलाकों में अकसर दिखाई देती है। यह हमें तंत्र,मंत्र, जादू–टोना, कालाजादू जैसे विकृत प्रथाओं के रूप दिखाई देता है, चुंकि बौद्व धर्म के तंत्र, मंत्र, यान का सर्वाधिक प्रभाव इन्ही इलाको में था।

तांत्रिक क्रियाओं का मूल स्वरूप –

हिन्दू तंत्र एक जटिल आध्यात्मिक प्रणाली है, जो वेदो, उपनिषदो, पुराणो और तांत्रिक गंथों से प्रेरित लगता है। तंत्र का मूल उद्देश्य है–

- आध्यात्मिक उन्नति – कुंडलिनी जागरण, – चक्र साधना और मोक्ष प्राप्ति।
- शक्ति पूजा – देवी (शक्ति) की विभिन्न रूपों (काली, दुर्गा) की उपासना।
- मंत्र और यंत्र – विशिष्ट मंत्रो और ज्यामितीय आकृतियों का उपयोग ध्यान और शक्ति संचय के लिए।

- पंचमकार – कुछ तांत्रिक सम्प्रदायों मे पंचमकार (मद्य, मांस, मत्स्य,मुद्रा, मैथुन) प्रतिकात्मक या वास्तविक हिन्दू धर्म में इन सिद्वियों का गलत अर्थ लगाना ही इसे विकृत स्वरूप प्रदान करता है।

तांत्रिक क्रियाओं में विकृतियां –

हिन्दू धर्म में तांत्रिक प्रथाओं की विकृतियां कई रूपो में सामने आई जो सामाजिक सांस्कृतिक कारको में प्रभावित है।

जादू – टोना और काला जादू –

विकृति – तंत्र को अकसर जादू – टोने वंशीकरण, मारण, और उच्चाटन जैसे कार्यो से जोड़ा जाता है। कुछ लोग तथाकथित तांत्रिको की मदद से दूसरो को नुकसान पहुचाने सम्पत्ति हडपने या व्यक्तिगत लाभ के लिए तंत्र का दुरूपयोग करते है।

डायन–टोनही प्रथा :–

बौद्व तंत्रयान में डाकिनी, योगिनी शब्दों का प्रयोग सिद्धी प्राप्त महिलाओं के लिए सम्मानजनक शब्द था, वही हिन्दू ब्राम्हण धर्म में उन महिलाओं को उपेक्षित और पतित करने उन्हें डायन–टोनही जैसे शब्दों से अपमानित किया गया। जिन सिद्व महिलाओं को बौद्व धर्म में आहर्त और थेरी पद प्राप्त था जो कि आगे सिद्व और डाकिनी जैसे सम्मानजनक शब्दो से सम्बोधित किया गया, उन्हें हिन्दू धर्म में ब्राम्हणों ने डायन, टोनही जादूगरनी आदि तुच्छ नामों से सम्बोधित कर उन्हे पतित किया गया।

डायन शब्द का प्रयोग पुरे भारत में हमे देखने को मिलता है, एक शब्द टोनही जिसका प्रयोग विशेषकर छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश में दिखाई देता है, इन क्षेत्रों में जो सिद्वी प्राप्त महिला है उनको टोनही कहा जाता है। ये टोनही सिद्धी प्राप्त महिला होती है इन्हें छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में टोनही सिद्धी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि इन शक्तियों का प्रयोग वो लोगो को नुकसान पहुचाने के लिए करती है, लेकिन इसके विपरीत यदि कोई सिद्ध पुरूष है उसे टोनहा कहते है। जो अपनी सिद्धि का प्रयोग लोगो के नुकसान के लिए करता है। इसके विपरीत हम देखते है कि भलाई के लिए कार्य करता है तो सिद्ध महिला ''बैगीन'' और सिद्ध पुरूष को ''बैगा''कहते है। बौद्व तंत्रयान के सिद्धो में पहले ही ये कह दिया था कि इन सिद्धियों का उपयोग मानव के कल्याण के लिए होना चाहिए सिद्धियो का गलत प्रयोग तुम्हारा नाश का कारण बनेगा।

बौद्व तंत्रयान में भी सिद्धियो का उपयोग किया गया, जिसका सबसें बड़ा उदाहरण उदयन और मांगधी की कहानी जो स्वप्नवास्वादत में हमे दिखाई देती है। इस समय तक भी इसका स्वरूप नही बदला इसके स्वरूप में (नाम में) विकृति हिन्दू तंत्रयान में ब्राम्हण प्रभाव के कारण हुआ, ब्राम्हणो ने इस सिद्ध महिला, पुरूषो को डायन, टोनही, टोनहा जैसे नामों से इन्हे विकृत किया। राजा उदयन जो कि एक बुद्विश्ट उपासक राजा था, बाद में ब्राम्हणो हिन्दू धर्मियो मे

उसके कहानी के साथ अतिश्योक्ति का निर्माण कर उसके द्वारा प्राप्त सिद्धियो जिनका उपयोग वह अपने अनैतिक लक्ष्यो को प्राप्त करने के लिए करते है। नैतिक रूप से प्रस्तुत किया।14

बौद्व तंत्रयान में डायन टोनही का संबंध –

बौद्व तंत्रयान और डायन – टोनही का संबंध तांत्रिक प्रथाओं वि ोशकर डाकिनी और सिद्वियों की गलत व्याख्या ऐतिहासिक समन्वयन और धार्मिक वर्चस्व के कारण हुआ, डाकिनी की अवधारणा जो बौद्व तंत्रयान और सिद्वों में एक सकारात्मक और आध्यात्मिक भाक्ति के रूप में महत्वपूर्ण है, को कुछ ब्राम्हणवादी पंरम्पराओं और सामाजिक, संस्कृतिक प्रथाओं के प्रभाव से विकृत किया गया जिसके परिणाम स्वरूप इसे नकारात्मक और भयावह रूप में प्रस्तुत किया गया जैसे कि डायन, टोनही यह विकृति ऐतिहासिक, धार्मिक सामाजिक और लैगिक कारकों का परिणाम थी।15

डाकिनी की मूल अवधारणा –

बौद्व तंत्रयान में डाकिनी – तंत्रयान में डाकिनी एक भाक्ति, बुद्वि और करूणा का प्रतिक है। यह एक ऐसी महिला जो साधक को बुद्वत्व आत्मज्ञान की ओर मार्गद िन करती है। उदाहरण के लिए तारा, मंजुश्री, महामाया, वज्रयोगिनी, जैसी डाकिनिया तंत्रयान में भी कहा जाता है। जो भान्यता और करूणा का प्रतीक है।16

हिन्दू तंत्र में डाकिनी –

हिन्दू तंत्र में डाकिनी को देवी की सहायिका या भाक्ति के रूप में देखा जाता है उदाहरण के लिए कुलाव तंत्र में डाकिनी को तांत्रिक साधना में सहायक भाक्ति के रूप में वर्णित किया गया है।

ब्राम्हणों द्वारा डाकिनी की विकृति

ऐतिहासिक संदर्भ –

मध्यकाल में लगभग 7वी से 12 वी भाताब्दी ब्राम्हणवादी परम्पराएं जो वैदिक और पौराणिक धर्म पर आधारित थी, तांत्रिक प्रथाओं बौद्व तंत्र को चुनौती देती थी बौद्व तंत्रयान की गूढ़ समावे ी प्रकृति जो जाति और लिंग की सीमाओं को लागथी थी। ब्राम्हणवादी रूढ़ियों के लिए खतरा थी।17

विकृति –

ब्राम्हणवादी विद्वानों ने बौद्व तांत्रिक प्रथाओं वि ोशकर सिद्व डाकिनी, टोनही की अवधारणा को अनैतिक, अ ुद्व या जादू–टोना से जोड़कर बदनाम किया। डाकिनी की सकारात्मक छवि को नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया जैसे कि वह कोई भयावह या हानिकारण भाक्ति हो।

उदाहरण – कुछ पुराणों और ब्राम्हणवादी ग्रंथो में बौद्व तांत्रिक प्रथाओं की वाममार्गी या अपवित्रता के रूप में दिखाया गया जैसे डाकिनी को डायन जैसी नकारात्मक छवि से जोड़ा।

डाकिनी का डायन के रूप में रूपांतरण

लैगिक भेदभाव –

बौद्व तंत्रयान में डाकिनी की अवधारणा जो एक भाक्ति ााली महिला आकृति को द ार्ती है आर्हत, येरी सिद्व ब्राम्हणवादी पितृसत्तात्मक व्यवस्था के लिए असहज थी। ब्राम्हणवाी समाज में महिलाओं को नियंत्रित करने की प्रवृत्ति ने डाकिनी की छवि को नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया जैसे डायन या टोनही जिससें महिलाओं पर ब्राम्हणों का नियंत्रण नि चत एवं आसान हुआ।

सांस्कृतिक गलतफहमी –

ग्रामीण और जनजातीय समुदायों में जहां ब्राम्हणवादी प्रभाव और लोक परम्पराए मिश्रित थी डाकिनी की अलौकिक भाक्तियों को जादू–टोना या काला जादू बना दिया गया। यह वि ोश रूप से उन महिलाओं के खिलाफ हुआ जो स्वतंत्र विधवा या सामाजिक रूप से हा‍ि ाए पर थी। चूंकि सिद्वि प्राप्त महिलाएं स्वतंत्र रहती थी।

उदाहरण– छत्तीसगढ़ में इन्हें टोनही जैसे भाब्दों का प्रयोग किया जाता है।

तांत्रिक प्रथाओं का नकारात्मक चित्रण

ब्राम्हणवादी ग्रंथ –

कुछ ब्राम्हणवादी ग्रंथो जैसे पुराणों स्मृतियों में तांत्रिक प्रथाओं की अ ुद्व या वैदिक विरोधी रूप में चित्रित किया गया। डाकिनी महिला जो तांत्रिक साधनाओं में महत्वपूर्ण को जादू–टोना करने वाली भयावह भाक्ति के रूप प्रस्तुत किया गया।

उदाहरण – मार्कण्डेय, पुराण और देवी भागवत पुराण में कुछ तांत्रिक प्रथाओं का नकारात्मक रूप में दिखाया गया है जिसने डाकिनी की छवि को प्रभावित किया डाकिनी को डायन या राक्षसी भाक्ति से जोड़ा गया।

सम्पत्ति और भाक्ति–

ब्राम्हणवादी समाज में संपत्ति और सामाजिक नियंत्रण को बनाए रखने के लिए डायन प्रथा का बढ़ावा दिया गया। डाकिनी की भाक्ति और स्वतंत्रता की छवि को डायन, टोनही के रूप में बदनाम करके बदला गया। महिलाओं को सामाजिक रूप से दबाया गया।18

लोक परम्पराओं के साथ मिश्रण –

ब्राम्हणवादी प्रभाव–

ब्राम्हणवादी पुजारियों और विद्वानों ने ग्रामीण और जनजातीय समुदायों में अपनी धार्मिक प्रथाओं को स्थापित करने थोपने के लिए तांत्रिक प्रथाओं को बदनाम किया। डाकिनी को स्थानीय लोककथाओं में डायन या टोनही के रूप में प्रस्तुत किया गया।

सामाजिक प्रभाव–

महिलाओं पर हिंसा –

डाकिनी की विकृत छवि डायन,टोनही के कारण महिलाओं पर हिंसा और सामाजिक बहिश्कार बढ़ा। डायन टोनही की गलत व्याख्या एवं अवधारणाओं से हजारो मौते हुई।

बौद्व तंत्रयान की बदनामी–

डाकिनी की गलत व्याख्या ने तंत्रयान की आध्यात्मिक गहराई को नकारात्मक एवं भयावह रूप में प्रस्तुत किया।19

निश्कर्श–

ब्राम्हणों ने डाकिनी की अवधारणा को जो बौद्व तंत्रयान में एक सकारात्मक और आध्यात्मिक भाक्ति थी, धार्मिक प्रतिद्वंद्विता पितृसत्तात्मक व्यवस्था महिलाओं को पृथ्ककरण और सामाजिक नियंत्रण के कारण ब्राम्हणों द्वारा बौद्वों के लिए चलाया गया घृणा अभियान था जिसमें ब्राम्हणों ने गलत प्रचार कर बौद्वों को पतित किया जिसका परिणाम हमें डायन, टोनही जैसे घृणित प्रथा के रूप में आज भी दिखाई देते है। डाकिनी को डायन या टोनही के रूप में प्रस्तुत करके बौद्व तांत्रिक प्रथाओं की महिला साधकों को बदनाम किया, जिसके परिणाम स्वरूप सामाजिक भेदभाव, लैगिक भेदभाव, लैगिक हिंसा को बढावा दिया। भारत में डायन टोनही मान्यताओं को इतिहास बौर कुछ नही ब्राम्हणों द्वारा बौद्वों के लिए चलाया गया एक घृणा अभियान मात्र था। जिसका खमियाजा तथागत गौतम बुद्व के द्वारा बनाए बहुजन समुदाय को भरना पडा। जिसके परिणाम स्वरूप भारी मात्रा में महिला–पुरूश सिद्वों बौद्व साधको की हत्या एवं विलुप्त, पृथ्ककरण सामाजिक बदनामी एवं हसिये मे धकेले जाने के कारण ब्राम्हणवादी वर्चस्व को आसानी हुई एवं बौद्व मान्यताओं साधनों की कमी निरंतर होती गई जिससे भारत में रहने वाले मानव समुदाय अनैतिकता एवं अंधवि वास की गहरी खाई में हमे ाा के लिए गिर गए जिसके कारण हम हमे ाा के लिए वैि वक परिदृश्य में अंधवि वासी और साप–सपेरो का दे ा बनकर रह गए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मैक्डानल्ड, हेलेन वीच क्राप्ट एक्यूसेसन्स फ्राम सेन्टल इण्डिया, रूटलेज पब्लिके ान, यूनाइटेड किंगडम पृश्ठ कं. 45–67
2. पारूलकर, अि वन भार्मा, सवा डिसपोसेसड स्टोरीइस फ्राम इण्डियास मार्कजिन्स, स्पीकिंग टाइगर, पृश्ठ कं. 112–130
3. सहाय एस बी., वी चक्राक्ट सोसल कोहिसन एण्ड कोन्फलिप्ट इन सेन्टल इण्डिया, जनरल आफ सोसियल ईसू इन इण्डिया, वाल्यूम 5, पृश्ठ 78–85
4. येसे, लाया यूबटेन इण्टोडक्सन टू तंत्रा द टासफारमेसनस आफ डिजायर, विसडम पब्लिके ान, दिल्ली, पृश्ठ कं. 55–70
5. वायमेन, एलेक्स द, बुद्विस्ट तंत्रास लाईट आन तिब्बतन एसोटोरिज्म रूटलेज पब्लिके ानस, यूनाईटेड किंगडम पृश्ठ कं. 89–110
6. सेमुअल, जीओफ्रे, द रोल आफ सिद्विस इन तिब्बतेन बुद्विज्म, सम्भाला पब्लिके ान, अमेरिका पृश्ठ कं. 23–35
7. डेविडसन, रोनाल्ड एम, इण्डियन इसोटोरिक बुद्विज्म ए सोसल हिस्टी आफ द तांत्रिक मोवमेन्ट, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस पृश्ठ कं. 31–32
8. भट्टाचार्य, वेनोयतोस, एन इन्द्रोडक्सन टू बुद्विज्म एसोटेरिज्म, मोतिलाल बनारसीदास पब्लिर्स प्राईवेट लिमिटेड, दिल्ली, पृश्ठ कं. 47
9. भट्टाचार्य, बेनोयतोस, उपरोक्त, पृश्ठ कं. 55
10. वाइट, डेविड गार्डन, तंत्रा इन प्रेक्टीस, प्रिस्टन युनिवर्सिटी प्रेस, पृश्ठ कं. 23–45
11. भट्टाचार्य, बेनोयतोस, पूर्वोक्त, पृश्ठ कं. 35
12. मेक्डोनाल्ड, हेलेन, पूर्वोक्त, पृश्ठ कं. 78–95
13. अर्बन, हयुग बी. तंत्र एण्ड इट्स मिसकोन्सेप्सनस इन मार्डन इण्डिया, जनरल आफ हिन्दूक्टडीस, पृश्ठ 45–60
14. प्रभाकर विश्णु, सोमदेव कृत कथा–सरिन्सागर, सस्ता साहित्य मण्ड प्रका ान, पृश्ठ कं. 118
15. ब्राउन राबर्ट एल, हाइपर, कैयरीन एने, द रूट्स आफ तंत्र सनी प्रेस पृश्ठ कं. 110–130
16. वाइट, डेविड गार्डन, पूर्वोक्त, पृश्ठ कं. 23–45
17. मेक्डानल्ड, हेलेन, पूर्वोक्त पृश्ठ कं. 78–95
18. पारूलकर, अि वन, भार्मा, सबा पूर्वोक्त पृश्ठ कं. 133
19. NCRB, crime in India, Report 2019

■ ■ ■